E Content for the Student of Patliputra University.

Subject – Political Science

Class B.A. (ऑनर्स) Part – II Paper – VIII

Topic – Causes of Partition of India

Dr. Umesh Chandra Shukla
Associate Prof. Political Science
R.R.S. College Mokama

भारतीय इतिहास की अति महत्वपूर्ण त्रासदी के रूप में स्वतंत्रता के साथ भारत के विभाजन की घटना को याद किया जाता है। इस पर विमर्श आगे भी जारी रहेगा। यह एक आश्चर्य की बात इसलिए भी है कि यह विभाजन ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर आधारित नहीं है। ऐसा नहीं है कि पूर्व के इतिहास में भौगोलिक दृष्टि से पाकिस्तान की कोई पहचान रही हो। जिन दिनों भारत में कई छोटे-छोटे राज्य हुआ करते थे, उन दिनों भी उस क्षेत्र विशेष में कई राज्य थे। किन्तु पाकिस्तान की कोई ऐतिहासिक या भौगोलिक पृष्ठभूमि नहीं थी।

यह विभाजन आश्चर्यजनक इसलिए भी है कि ९० वर्ष के जिस स्वतंत्रता संघर्ष में हिन्दू और मुस्लिम साथ-साथ संघर्ष कर रहे, यातनाएँ झेलीं, स्वतंत्र भारत के सपने देखे – उन्हें क्या हो गया कि जब स्वतंत्रता की प्राप्ति का अन्तिम दौर आया तो वे अलग-अलग हो गये तथा इसके लिए भीषण संघर्ष भी किया।

आश्चर्य की एक बात यहाँ यह भी है कि यह विभाजन का निर्णय कुछ खास नेताओं द्वारा लिया गया। उन्होंने उन्मादी धार्मिक हवा फैलाने में सफलता प्राप्त कर ली, जिसकी परिणति राष्ट्र विभाजन में हुआ।

भारत विभाजन के कारणों की समीक्षा में इसके निम्नलिखित कारण बतलाये जा सकते हैं —

(1) ब्रिटिश सरकार की विभाजन करो और शासन करो की नीति —

शासन की सबसे प्रभावी नीति यह रही

है कि शासितों को विभाजित करो, उन्हें एक दूसरे का भय दिखाते रहो तथा सुरक्षा के नाम पर सरकार पर निर्भरता की ओर आकर्षित करो। ब्रिटिश सरकार अपनी इसी नीति के आधार पर हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच विभाजक रेखा खींचने में सफल रही। इसका परिणाम धर्म के आधार पर भारत विभाजन का रहा।

(2) जिन्ना की नीति — 1920 के पहले कांग्रेस के साथ कार्य करने वाले जिन्ना अचानक राष्ट्रीय आंदोलन से अपने को अलग कर लिया। वे लगभग इंगलैंड में रहने लगे। 1930 में मुस्लिम लीग की अध्यक्षता करते हुए उन्होंने मुसलमानों को एक अलग कौम (राष्ट्र) के रूप में पहचान बनाने की घोषणा की। पुनः 1940 में उन्होंने पाकिस्तान निर्माण की माँग रखी। 1945 के बाद वे अपनी जिद पर इतने अड़ गये कि सम्पूर्ण वातावरण धार्मिक उन्माद का शिकार हो गया। 16 अगस्त 1946 को उन्होंने Direct Action का नारा दिया, जिसमें भयानक नरसंहार हुआ। इससे कांग्रेस के नेताओं में भी यह धारणा व्याप्त होने लगी कि वे प्रायः ऐसी ही हरकत करते रहेंगे, जिससे शांति से राष्ट्र को चलाना मुश्किल हो जायेगा।

(3) कांग्रेस नेतृत्व की असफलता — यह एक यथार्थ के रूप में स्वीकार करना ही पड़ेगा कि जिन्ना की नीति के काट में कांग्रेस का नेतृत्व असफल हो रहा था। राष्ट्रीय मुस्लिम नेता कांग्रेस में कई थे। मौलाना आजाद कांग्रेस के अध्यक्ष थे, खान अब्दुल गफ्फार खान विभाजन के विरुद्ध थे। किन्तु जिन्ना का धार्मिक उन्माद ज्यादा असरदार हो रहा था। इधर 1945 के बाद तेजगति से भारतीय स्वतंत्रता की प्राप्ति का विकल्प होने जा रहा था। ऐसी स्थिति में कांग्रेस नेतृत्व दोनों मोर्चों पर सहजता पूर्वक काम नहीं कर सका।

(4) 1937 का प्रान्त विधानमंडल का चुनाव — 1937 में प्रांतीय स्वायत्तता के नाम पर राज्य विधान मंडल का चुनाव हो गया। इसमें कांग्रेस को काफी अच्छी सफलता मिली। मुस्लिम लीग इसका अर्थ यह लगाया कि स्वतंत्र एकीकृत भारत में उनकी

कमजोर होगी। फलतः उनके नेता विभाजन पर अधिक बल देने लगे। वे पाकिस्तान की बात करने लगे जिसमें उनका बहुमत रहता और उनकी सियासत चमकती।

5. कैबिनेट मिशन प्लान – कैबिनेट मिशन प्लान ने यद्यपि भारत विभाजन की बात को नकार दिया किन्तु राज्यों के समूह की नई योजना दी। यह एक भयावह योजना थी इसमें भी प्रबल विभाजन के बीज मौजूद थे।

6. देसी रजवाड़ों की स्वायत्तता – माउंटबेटन योजना में सभी देसी रजवाड़ों को स्वायत्तता देने का प्रस्ताव था। अर्थात सभी देसी रियासतें संप्रभुता सम्पन्न राज्य होने वाले थे। कांग्रेस नेतृत्व इससे चिंतित हो गया। उसे लगा कि जल्द से जल्द स्वतंत्रता प्राप्त कर देसी रियासतों को एकीकृत करने का प्रयास किया जाए। यह एक कारण बना कि कांग्रेस को विभाजन का प्रस्ताव स्वीकार करना पड़ा।

7 गाँधी जी की नीति से कांग्रेस असहमत – विभाजन को रोकने के गांधी जी के कुछ प्रस्तावों से कांग्रेस पूर्णतः असहमत थी। गांधीजी का प्रस्ताव था कि हमें विभाजन स्वीकार नहीं करनी चाहिए, भले ही इसके लिए आजादी देर से मिले या पुनः आंदोलन करना पड़े। इसमें प्रस्ताव जिन्ना को प्रधानमंत्री बनाकर विभाजन को रोकना था। कांग्रेस गांधीजी के इन प्रस्तावों से असहज तथा असहमत थी।

8 अन्तरिम सरकार का मुस्लिम लीग द्वारा विरोध – कैबिनेट मिशन प्लान ने ~~कैबिनेट~~ अन्तरिम कैबिनेट का प्रस्ताव दिया था, जिसे स्वीकार किया गया था। जवाहरलाल नेहरु को इसका उपाध्यक्ष बनाया गया था। मुस्लिम लीग प्रारंभ में तो इसमें शामिल होने से इंकार कर दिया, बाद में शामिल भी हुआ तो उनका उद्देश्य अड़ंगेबाजी की नीति थी। इससे बढ़ते तनाव के बीच राष्ट्र विभाजन ही उचित जान पड़ा।

संक्षेप में ये सभी भारत विभाजन के उत्तरदायी कारण माने जा सकते हैं।